यीशु सबसे उत्तम कहानी बताने वाला

यीशु की कहानियों को सिखाने के लिये और वे दूसरों को बता सकें उनकी सहायता करें।

प्रार्थना: "प्रभु सहायता कर कि बच्चे दूसरों को क्षमा करना यीशु की कहानी। क्षमा करने वाला सेवक से सीख सकें"।

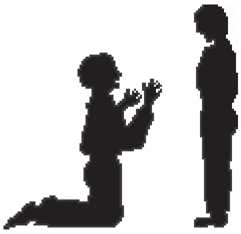

इन में से कोई भी बच्चों को सीखाने की गतिविधि चुने।

बच्चे इस चित्र का नकल करे।

एक बड़ा बच्चा या शिक्षक पढ़े या **(मत्ती 18:21-34)** की "क्षमा करने वाले सेवक की कहानी अपनी याद से बताये। ये बताती है कि यीशु ने कैसे हमें बताने के लिये कहानी का इस्तेमाल किया कि कैसे हमें उन्हें जिन्होंने हमारे प्रति गलत किया क्षमा करें।

कहानी बताने के बाद, ये प्रश्न पूछें *(उत्तर हर प्रश्न के पीछे हैं)*

- क्या हम कभी लोगों को क्षमा करना बन्द कर देते हैं? *(देखें पद 21, हमें हमेशा क्षमा करना चाहिये)*
- जो दास कर्ज नहीं अदा कर पाया स्वामी ने उसके साथ क्या किया? *(पद 27 देखें)*
- इस सेवक ने दूसरे सेवक से जो कुछ पैसा इसका धरता था क्या किया? *(पद 30 देखें)*
- इस पर स्वामी की प्रतिक्रिया क्या थी? *(देखें पद 34)*
- स्वर्ग में हमारा प्रभु हम से क्या चाहता है कि जो हमसे बुरा करें उनके साथ कैसा बर्ताव करें? *(पद 35)*

क्षमा न करने वाले सेवक की कहानी के भाग को नाटक का रूप दें। अराधना के अगुवे के साथ प्रबन्ध करें कि बच्चे ये नाटक प्रस्तुत कर सकें। नाटक तैयार करने के लिये बच्चों के साथ अपना समय लगायें। सभी भाग इस्तेमाल करने की आवश्यकता नहीं। तैयारी में बड़े बच्चे छोटों की सहायता करें।

- बड़े बच्चों या बड़ों को प्रवक्ता, स्वामी (कागज के साथ) और अकृतज्ञ सेवक की भूमिका करें।
- छोटे बच्चे पतरस, मित्रों, दारोगा और दूसरे सेवक की भूमिका करें।

प्रवक्ता: कहानी का प्रथम भाग बताता है, पद 21-27 तब कहता है, "सुनो कि पतरस ने यीशु से क्या पूछा"।

पतरस: ऊपर देखकर कहता है, "प्रभु कितनी बार मुझे अपने भाई को क्षमा करना है?"

प्रवक्ता: यीशु ने स्वामी और दास की कहानी के द्वारा उत्तर दिया। दास स्वामी का बड़ा कर्जदार था। सुनो स्वामी क्या कहता है"।

स्वामी: "ये कागज़ तुम्हारे कर्ज का सहमति पत्र है। ये दिखाता है कि तुम मेरे बड़े कर्जदार हो। जो कर्ज है वह वापस करो या मैं तुमको और तुम्हारे परिवार को दास बनाकर बेच दूंगा"।

अकृतज्ञ सेवक: घुटनो पर बैठकर भीख मांगता है, "मुझ पर दया करो, मैं सब भर दूंगा, कृपा कर मुझ पर दया करें!"

स्वामी: कागज़ फाड़ देता और कहता है, मैं तुम पर दया करता हूँ, मैं तुम्हारा सब कर्ज माफ करता हूँ"।

प्रवक्ता: पद 28-35 का कहानी का दूसरा हिस्सा बताता है तब कहता है, देखो ये नमकहराम दास क्या करता है"।

अकृतज सेवक राजा के सामने से चला जाता है, दूसरे दास के पास जाकर उसे धमका देता है और कहता है, "जो तू धरता है हमें अभी मुझे लौटा दे"।

दूसरा दास: घुटनो पर बैठकर भीख मांगता है, "कृपा कर मुझ पर दया करें, मैं सब कुछ जल्दी भर दूंगा"

अकृतज सेवक: "नहीं! दारोगा इसे ले जाओ!"

दारोगा: दूसरे दास को घसीटकर ले जाता और कहता है, "तुम जब तक कर्ज ना भर दो तब तक बन्दीगृह में रहोगे"।

मित्र: राजा के पास जाकर कहते हैं, "स्वामी, जिस दास को आपने क्षमा कर दिया वह दूसरे को क्षमा नहीं करता। उसने दूसरे दास को जो उसका थोड़े पैसों का कर्जदार था उसे बन्दीगृह में डाला दिया है"।

राजा: (उस अकृतज्ञ दास को बुलवाता है), "यहां आओ, तुम! (अकृतज्ञ सेवक आता है) और उदार स्वामी"

अकृतज सेवक: दौड़के मलिक के पास जाओ, झुको और बोलो, ''मै आपके सेवा मे हूं हे महान और उदार मालिक"

स्वामी: (क्रोद्ध से) "क्यों तुमने माफ नहीं किया जैसा मैंने किया? दारोगा इसे बन्दीगृह में डालो"।

दारोगा: अकृतज्ञ सेवक को घसीटता है कहता है, "जब तक तुम कर्ज चुकाओ यही बन्दीगृह ही में रहोगे"

प्रवक्ता या बड़ा बच्चा: जिन्होंने सहायता की उन सब को धन्यवाद देता है।

यदि बच्चे बड़ों के लिये इस कहानी को नाटक का रूप दें तो उन्हें प्रश्न पूछने दें जो ऊपर की सूचि में दिये गये हैं।

बच्चों से पूछें, "कहानी के और भी कौन से उदाहरण है जो यीशु ने लोगों को परमेश्वर के राज्य के बारे में सिखाया?" (बच्चों को उदाहरण देने दें)

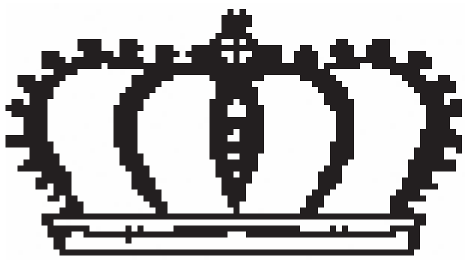

राजा का राजकीय भुकट बनाओ। बच्चों को नाटक करने दें और उसकी तस्वीर बड़ों को अगली आराधना के समय दिखायें या घर पर माता पिता को दिखायें।

- बच्चों को बताने दे कि राजा का राजकीय मुकुट यीशु की कहानी प्रगट करता है।
- परमेश्वर हमारा आत्मिक राजा है, तुम उसके सब कुछ कर्जदार हो।
- कभी कभी जैसा हमें करना चाहिये उसकी सेवा नहीं करते पर वह हमें क्षमा करता है।
- जैसा हमारे स्वामी यीशु ने हमें क्षमा किया हमें भी दूसरों को क्षमा करना चाहिये।

कुलुस्सियों 3:16 कंठस्थ करें।

कविता: तीन बच्चों को भजन 45:1-24 की एक आयत की कविता पाठ करने दें नाटक लिखने दीजिये। वे इसे सप्ताह के बीच शायद करें।

प्रार्थना: "प्रिय प्रभु और राजा, जो कुछ भी हमारे पास है वह सब आपकी आशीष से आता है। आप हमारे सब पापों को क्षमा करके हमें दुष्ट से स्वतंत्र करते हैं। कभी कभी इसे हम भूल जाते और दूसरे लोगों को क्षमा करने में असफल रहते। सहायता कर कि हम आपकी तरह क्षमा करें।"